योगासन / प्राणायाम

प्राणायाम :

भस्त्रिका

कपालभाति

बाह्य

अनुलोम-विलोम

उज्जायी

भ्रामरी

उद्गीथ

ध्यान

योगासन :

मण्डूकासन-1 (अ)

मण्डूकासन-1 (ब)

मण्डूकासन-2

शशकासन

गोमुखासन

वक्रासन

यज्ञ-प्राणायाम निर्देश

परम पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा निर्देशित प्राणायाम एवं आसनों का अभ्यास, जिसकी विधि एवं सावधानियों को ध्यान में रखते हुए योगाचार्य के निर्देशन में करें।

Cancer / कैंसर

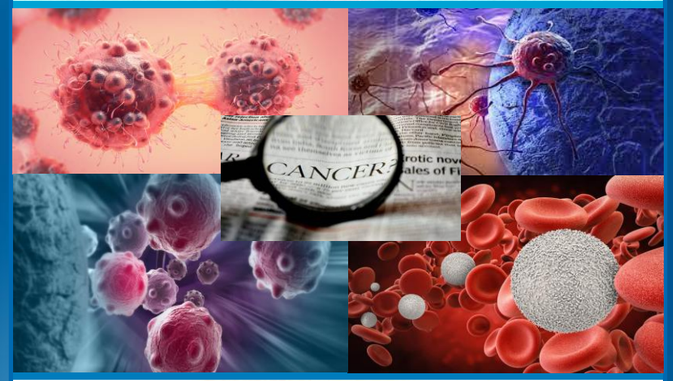

वैज्ञानिकों की दृष्टि में 'यज्ञ'

- **मैंने 25 वर्ष के खोज और परीक्षण से क्षय रोग का 'यज्ञ' चिकित्सा से सफल उपचार किया हूँ तथा उनमें ऐसे भी रोगीं थे, जिनके क्षत (कैविटी) कई-कई इंच लंबे थे और जिनको वर्षों सैनिटोरियम और पहाड़ पर रहने पर भी अंत में डॉक्टरों ने असाध्य बता दिया, पर वे भी यज्ञ चिकित्सा से पूर्ण निरोग होकर अब अपना कारोबार कर रहे हैं।**

  -(फुंदनलाल अग्निहोत्री)

- **जब यज्ञ किया जाता है तो वातावरण में प्राण ऊर्जा के स्तर में वृद्धि होती है, जो कि प्रयोगों में यज्ञ से पहले और बाद में मानव हाथों की किर्लियन तस्वीरों की मदद से भी दर्ज किया गया था।**

  -(जर्मन डॉ. माथियास फरिंजर)

- **अनाहत चक्र (Cardiac Plexus) पर अग्निहोत्र (यज्ञ) के प्रभावों का अध्ययन किया है। यज्ञ के बाद की स्थिति वैसी ही पाई जाती है जैसी कि मानसिक या आध्यात्मिक उपचार के बाद होती है।**

  -(डॉ. हिरोशी मोटोयामा)

- **जलती हुई खांड (शक्कर) के धुंए में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे हैजा, तपेदिक (टी.बी.), चेचक इत्यादि का विष शीघ्र नष्ट हो जाता है।**

  -(फ्रांस के विज्ञानवेत्ता प्रो. ट्रिलवर्ट)

यज्ञ महिमा, पतंजलि योगपीठ

से जुड़ने हेतु सोशल मीडिया

www.facebook.com/swamiyagyadev	www.facebook.com/स्वामी विप्रदेव
twitter.com/@swamiyagyadev	twitter.com/@SVipradev
www.youtube.com/user/Swamiyagyadev	
https://instagram.com/Swamiyagyadev	

Vedic 4:00 A.M. to 5:00 A.M. & 11:30 A.M. to 11:55 AM, 11:30 P.M. to 11:55 P.M. (प्रतिदिन अग्निहोत्र कार्यक्रम देखें।)

भजन 5:00 A.M. to 6:00 A.M. (प्रतिदिन अग्निहोत्र कार्यक्रम देखें।)

E-mail ID : yajyavijyaanam@patanjaliyogpeeth.org.in Mobile & Whatsapp No. : 9068565306, 9890977399

यज्ञ एवं योग साधना केन्द्र

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि। परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्॥ -(यजु. 1.2)

अर्थात् : हे विद्यायुक्त मनुष्य! तू जो यज्ञ शुद्धि का हेतु है। जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की किरणों में स्थिर होने वाला, वायु के साथ देश-देशान्तरों में फैलने वाला, वायु को शुद्ध करने वाला व संसार का धारण करने वाला तथा जो उत्तम स्थान से सुख का बढ़ाने वाला है। इस यज्ञ का तू मत त्याग कर तथा तेरा यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उस को न त्यागे ।

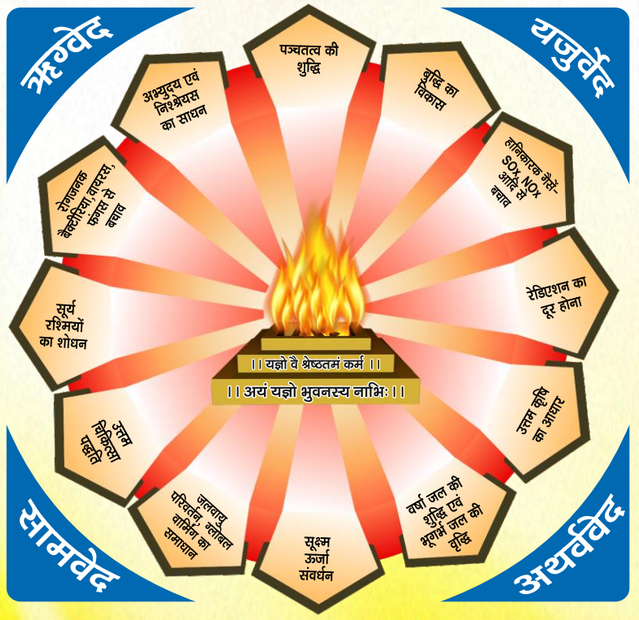

अग्निहोत्र से वायु एवं वृष्टि जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना, इसीलिये इस को देवयज्ञ कहते हैं। (स०प्र० चतुर्थसमुल्लास) -महर्षि दयानंद सरस्वती।

यज्ञ चिकित्सा

पतंजलि आयुर्वेद का विशिष्ट उत्पाद

कैंसरनाशी

500 g

(हवन सामग्री)

स्वास्थ्य-साधना का आधार

भारत में निर्मित
MADE IN BHARAT

Store in cool & Dry Place.
Keep away from direct sunlight.
After opening transfer the content in an airtight container.

Mfd. By:
Divya Pharmacy
For mfg. Unit address, read the first character (s) of the Batch Code #.
A) A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand, INDIA
B) Unit-II, Khasra No. 210, 211, Patanjali Food & Herbal Park Laksar Road, Padartha, Haridwar-249404, Uttarakhand, INDIA

For Feedback and complaints write to :
The Consumer Care Manager, Divya Pharmacy,
A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand.
E-mail : customercare@divyapharmacy.org
Customer Care Toll Free No. : 18001804055
जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- yajyavijyaanam@gmail.com

8904049100726

Images are for representation purpose only

आयुर्वेदेषु यत्प्रोक्तं यस्य रोगस्य भेषजम् ।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं तेन तेनैव होमयेत् ।।
-(आयुर्वेद)

अर्थात्– आयुर्वेद में जिन रोगों के शमन के लिए जिन औषधियों का विधान है, उन-उन रोगों के शमन के लिए उन्हीं औषधियों से हवन करें।

प्रयोग विधि– प्रतिदिन सुबह-शाम प्रस्तुत हवन सामग्री से रोग की अवस्थानुसार 21, 51 या 108 आहुतियां मंत्रोच्चारण पूर्वक प्रदान करें। प्रत्येक आहुति में 2 से 3 ग्राम गोघृत के साथ उसी अनुपात में सामग्री की भी आहुति दें।

कक्ष में हवन करते समय खिड़की-दरवाजे खुले रखें तथा हवन के पश्चात् शांत-अग्नि के अंगारों पर प्रस्तुत जड़ी-बूटियों व गुग्गुल आदि द्रव्यों को रखें और उठ रही मंद सी धूनी वाले वायुमंडल में रोगानुसार योगाभ्यास करें।

हल्दी, अपामार्ग, गुग्गुल, देवदारू, लोध्र, माजूफल, शतावर, मंजिष्ठा, घायफूल, तुलसी, मुनक्का, मकोय, दालचीनी, अश्वगंधा, दारूहल्दी, कचूर, कलौंजी से निर्मित कैंसरनाशी (हवन सामग्री) से लंग्स कैंसर, ब्रेन कैंसर, ब्लड कैंसर आदि सभी प्रकार के कैंसर में लाभप्रद तथा वातावरण जीवनीय शक्ति से युक्त, सुगन्धित, स्वच्छ एवं शान्तिदायक बनता है।

Cancernashi (Havan Samagri) useful in all types of cancer as lungs cancer, brain cancer, blood cancer etc. and maintain vitality, good smelling, peacefulness, health and hygiene of atmosphere.

यज्ञ के भस्म का सेवन

सभी प्रकार के रोगों में यज्ञ शेष भस्म को छानकर प्रति 1 लीटर पानी में 2 ग्राम से 5 ग्राम की मात्रा में कपड़े की पोटली बनाकर जल पात्र में रखकर 8 घंटे के बाद यही पानी पीए। इसी जल मे सोंठ का प्रयोग भी अत्यंत लाभदायक है। सामान्य व्यक्ति भी स्वास्थ्य लाभ हेतु इस पानी को पी सकते है।

आयुर्वेदिक उपचार

- दिव्य संजीवनी वटी, दिव्य कैशोर गुग्गुल, दिव्य आरोग्यवर्धिनी वटी, दिव्य उदरामृत वटी।
- दिव्य अभ्रक भस्म, दिव्य मुक्ता पिष्टी, दिव्य स्वर्ण बसन्तमालती, दिव्य हीरक भस्म, दिव्य कासीस भस्म, दिव्य ताम्र भस्म, दिव्य रस माणिक्य, दिव्य अमृता सत्, दिव्य प्रवालपंचामृत, दिव्य शिलासिन्दूर, दिव्य गिलोय सत्,।
- दिव्य सर्वकल्प क्वाथ, दिव्य कायाकल्प क्वाथ।

पथ्य-आहार

- जितना हो सके अंकुरित खाये व हो सके तो कच्चे पदार्थ का सेवन करें तथा मीठे में गुड़, शक्कर, शहद आदि लें, ऑर्गेनिक फूड ही लें, दिनचर्या व्यवस्थित रखें, दिन में ना सोयें, खुश रहे, प्रसन्न रहे अहिंसक सात्विक जीवन शैली जियें।

अपथ्य-आहार

- नमक कम-से-कम सेवन में लें, ऑटीफिसियल शुगर न ले, फ्रिजर्व फूड, जंक फूड, फास्ट फूड, केमिकल वाले फूड से बचे, बीड़ी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू, गुटखा आदि नशीले पदार्थ न लें, मांसाहार भोजन न करें।

घरेलू उपचार

- पंचामृत– गिलोय एक दण्डी, गेहूँ का ज्वारा, एलोवेरा (20 से 30 मिली), तुलसी (7 पत्ते), नीम (7 से 21 पत्ते) सभी को मिलाकर जूस बनाकर खाली पेट सुबह-सायं पियें।
- गोधन अर्क का प्रतिदिन सुबह-सायं खाली पेट जल के साथ सेवन करें।
- प्रतिदिन एक-एक गमले में या थोड़ी भूमि हो तो भूमि पर नौ दिन तक गेहूँ उगाएँ। 10वें दिन प्रथम गमले में उग आई गेहूँ की हरी पत्तियों को काट कर 10 ग्राम+25 ग्राम गिलोय (लगभग दो फुट लम्बी व एक अंगुली जितनी मोटी) लेकर थोड़ा पानी मिलाकर पीस लें, कपड़े से निचोड़कर 1 कप की मात्रा में खाली पेट नित्य प्रयोग करें। खाली हुए गमले में अगली बार के लिए पुनः गेहूँ के दाने बो दें।
- हल्दी का सेवन (गर्म दूध या गर्म पानी के साथ) विशेष रूप से कैंसर में लाभदायक होता है।
- सदैव प्रसन्न एवं आनन्दित रहे।

कैंसर में प्राकृतिक चिकित्सा

- सामान्य एवं असामान्य कैंसर वाली गांठों में मिट्टी की पट्टी, नीम के पानी का एनिमा, गांठ पर हल्दी तथा घृतकुमारी मिश्रित मिट्टी की पुल्टिस, ठण्डा कटिस्नान, रीढ़स्नान, कैंसरनाशक गिलोय, नीम एवं गेहूँ के ज्वारे का रस, गहरे हरे, लाल, पीली तथा नारंगी रंग की सब्जियों व फलों का सेवन तथा अंकुरित अनाज आदि का सेवन करने से लाभ होता है।

योग-यज्ञ से मिलती विमल मति।
न करो भेदभाव न अभिमान अति ।।

'यज्ञ' की यह शुद्ध हवा। सब रोगों की है दवा।।
जो तुम चाहते हो रोगों से छुटकारा। तो लो नियमित 'यज्ञ' का सहारा।।